International Journal of Jyotish Research: 2017; 2(1): 32-38

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2017; 2(1): 32-38
© 2016 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 20-11-2016
Accepted: 22-12-2016

Deepti Tyagi
Researcher Scholar Maharshi Panini Sanskrit Evam Vedic Vishwavidyalaya, Madhya Pradesh, India

\

Correspondence
Deepti Tyagi
Researcher Scholar Maharshi Panini Sanskrit Evam Vedic Vishwavidyalaya, Madhya Pradesh, India

ज्योतिष में रोगों का कारण व निवारण

Deepti Tyagi

सारांश

पहला *सुख निरोगी काया* अर्थात स्वास्थ्य जीवन का सबसे बड़ा सुख हैं | यदि व्यक्ति स्वास्थ्य नही हैं तो अन्य सुख किस काम का | पुरुषार्थ में भी धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का मूल आधार स्वास्थ्य है । इन चतुर्विध पुरुषार्थों को सिद्ध करने के लिए स्वस्थ होना परम आवश्यक है[1]। इसलिए हर कार्य को छोडकर स्वास्थ्य की रक्षा करें । स्वस्थ शरीर ही सभी कर्मों का मूलाधार हैं[2] | स्वस्थ शरीर को पहला धर्म माना हैं | अर्थात् धर्म, श्रेष्ठ कर्म, परमार्थ आदि करने के लिए शरीर प्रारंभिक साधन है। यदि शरीर स्वस्थ नहीं है, तो मन में अच्छे भाव, अच्छे विचार होते हुए भी मनुष्य अच्छे कार्यों को अंजाम नहीं दे सकता। आचार्य कौटिल्य के अनुसार "सभी वस्तुओं का परित्याग करके सर्वप्रथम शरीर की रक्षा करनी चाहिए क्योकि शरीर नष्ट होने पर सबका नाश हो जाता हैं" | शरीर का शत्रु रोग रोग हैं रोगी की स्थिति मृतक के समान ही होती हैं | महाभारत के उद्योगपर्व में कहा गया हैं कि "मृत कल्पा हि रोगिण:" | ज्योतिष और आयुर्वेद दोनों ही शास्त्र की मान्यता है की रोग पूर्व जन्म में किये गये पाप इस जन्म में व्याधि के रूप में कष्ट देते हैं[3] | शरीर की धातुओं में वातादि दोषों में विषमता विकार अर्थात रोग उत्पन्न करते हैं | उनका ठीक होना आरोग्यता हैं आरोग्यता को सुख कहा गया हैं जबकि रोग दु:ख हैं[4] | वातादि दोषों को संतुलित रखना ही आरोग्य का प्रमुख कारण हैं | क्योकि सभी रोगों का कारण प्रकुपित दोष ही हैं[5] | ग्रह-नक्षत्रादि में उपस्थित कफादि त्रिदोष मानव जीवन को प्रभावित करती हैं | रोगों की उत्पत्ति, कारण, भेद एवं लक्षण आदि के सम्बन्ध में आयुर्वेद और ज्योतिष में बहुत समानता हैं रोगोत्पत्ति के कारण के विषय में जन्म फलों का आधार पूर्व जन्मकृत कर्मों को बताया हैं जो भारतीय ज्योतिष और भारतीय चिकित्सा अर्थात आयुर्वेद दोनों ने ही ने 'जन्मांतर कृतं कर्म व्याधि रूपेण जायते"[6] कह कर उसकी पुष्टि की हैं | प्रारब्ध, संचित एवं क्रियमाण कर्म के तीन भेदों में संचित कर्म ही रोगोत्पत्ति के मुख्य रूप से स्वीकृत हैं | आचार्य सुश्रुत ने कर्म व दोषों दोनों के प्रकोपों द्वारा रोगोत्पत्ति को स्वीकार किया हैं [7]|

कूट शब्द: रोग, चिकित्सा, ग्रह, ज्योतिष

1. प्रस्तवना

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार भी हर छोटा या बड़ा रोग पूर्व कर्म के फलस्वरूप ही

उत्पन्न होता है। अतः जन्मकुंडली एवं ग्रह गोचर से रोगों का कारण एवं स्वरुप को जाना जा सकता है। जातक की जन्मकुंडली का अधययन करके भविष्य में कौन सा रोग उसे कष्ट पहुंचाएंगे इसकी जानकारी प्राप्त की जा सकती है। ज्योतिष शास्त्र में रोग विकार के लिए जितने भी योग बताये गए है उनमे तीन तत्व प्रमुख है १.ग्रह २. राशि ३. भाव । रोग विकार के सन्दर्भ में इनकी की भूमिका होती है।

2. **ज्योतिष शास्त्र में रोग निर्धारक तथ्य:** दर्शन का एक सिद्धांत - "यत् पिंडे तत् ब्रह्मांडे" जो पिंड अर्थात मानव शरीर एवं ब्रह्मण्ड की एक रूपता को निरुपित करता हैं, इस सिद्धांत का ज्योतिषीय प्रतिपादन प्रस्तुत करते हुए आचार्य वराहमिहिर[8] समस्त ज्योर्तिमण्डल को कालपुरुष की कल्पना करते हुए मानव के विभिन्न आयामों का सीधा सम्बन्ध स्थापित किया हैं | को सिद्ध करता हैं कि व्यक्ति रूपी उसी काल पुरुष का एक अभिन्न अंग हैं और उससे घनिष्ट रूप से जुड़ा हुआ हैं | जैसे कि आचर्य वराहमिहिर ने सूर्य को कालपुरुष की आत्मा कहा हैं, ब्रह्माण्ड में यह विराट आत्मा का प्रतिनिधित्व करता हैं, जो केन्द्रक शक्ति हैं | चंद्रमा कालपुरुष का मन हैं, मानवीय शरीर को भी समस्त मानसिकता जन्म कालीन चंद्रमा से ही प्राप्त होती हैं | इसी प्रकार मंगल को सत्त्व, बुध को वाणी, गुरु को ज्ञान, शुक्र को काम, शनि को दुःख एवं द्वादश राशियों को काल पुरुष के विभिन्न अंग कल्पित करते हैं | जिसमे मेष राशि मस्तिष्क, वृष मुख, मिथुन छाती, कर्क- ह्रदय, सिंह - उदार, कन्या काटि, तुला वस्ति, वृश्चिक लिंग, धनु जंघा, मकर घुटना कुम्भ पिंडली एवं मीन पैर की जब पाप ग्रह पीड़ित करते हैं तो उस राशि से सम्बंधित अंग में कष्ट या व्याधि होती हैं [9]| इस प्रकार ज्योतिष शास्त्र में काल पुरुष की कल्पना करके उसके शरीर के अंगों में मेषादि बारह राशियों को व्यवस्थित किया गया हैं, जिसमे सूर्यादि ग्रह अपने अधिपत्य अंग, धातु और दोषों का प्रतिनिधित्व करते हुए प्रतिकूल होते हुए उनमे स्थित होने पर उन अंगों में रोगों के संकेत देते हैं तथा पुष्ट होने पर उन अंगों की पुष्टता के द्योतक होते हैं[10] |

3. **रोग उत्पत्ति का विचार:** व्यक्ति के जन्म पत्रिका में रोग का विचार मुख्यतः षष्ठ भाव, षष्ठेश, षष्ठभावस्थ ग्रह,अष्टम भाव, अष्टमेश, अष्टम भावस्थ ग्रह, द्वादश भाव, द्वादशेश. द्वादशस्थ ग्रह तथा षष्ठेश से युक्त दृष्ट ग्रहों द्वारा एवं पाप ग्रहों द्वारा एवं मंगल ग्रह द्वारा किया जाता हैं [11]| इसके अतिरिक्त पाप प्रभाव से युत राशियाँ एवं नीच राशिगत, अस्तगत ग्रह, निर्बल ग्रह, लग्न, लग्नेश, अवरोही ग्रह, क्रूर, क्षष्ठयंशगत ग्रह, मारक ग्रह, एवं बालारिष्ट कारक ग्रह भी रोगों के कारक माने जाते है। ग्रहों के शुभत्व, अशुभत्व एवं बलाबल के आधार पर रोग एवं रोगी की चर्या, प्रभाव और कालावधि का निर्णय किया जाता है।

4. **रोगों का ज्योतिषीय उपचार:** जब जन्म पत्रिका ग्रह योग देख कर रोग का निर्णय हो जाने के बाद ज्योतिष इन ग्रहों के अशुभ प्रभाव से बचने के लिए दृष्ट एवं अदृष्ट निमित्तजन्य रोगों की निवृत्ति के उपाय बताये हैं | दृष्ट उपायों में ग्रह चिकित्सा जैसे रत्न, मन्त्र, औषधि, दान एवं स्नान तथा अदृष्ट उपायों में प्रायश्चित किया जाता हैं | पुवार्जित अशुभ कर्मों के प्रभाव द्वारा रोग उत्पन्न होते हैं | अतः जप, दान, हवन द्वारा ज्योतिष के द्वारा रोगों की चिकित्सा की जाती हैं[12] |

4.1 रत्नों द्वारा रोगों का उपचार: आचार्य वराहमिहिर ने बृहत्संहिता में रत्नों तथा उनके गुण-दोषों का विस्तार से वर्णन किया हैं | मुहुर्तचिन्तामणि के अनुसार ग्रहों की भाव स्थिति या राशि स्थिति ख़राब हो तो ग्रहों के रत्नों को सूर्य के लिए माणिक्य, चंद्रमा के लिए मोती, मंगल के लिए मूंगा, बुध के लिए पन्ना, बृहस्पति के लिए पुखराज, शुक्र के लिए हीरा, शनि के लिए नीलम, राहु के लिए गोमेद, केतु के लिए लहसुनिया को धारण करना चाहिए [13]| इनके धारण करने के समय को लेकर आचार्यों में मत भेद है की इसे कब धारण किया जाए दशा- अन्तर्दशा में, लग्नेश, भाग्येश, पंचमेश होने पर या गोचर में अशुभ होने पर धारण किया जाये |

मेषादि लग्न से उत्पन्न व्यक्तियों को रोग निवृति के अपने लग्नेश से सम्बन्धित रत्न धारण करना चाहिए |[14]

क्रमांक	जन्म लग्न	लग्नेश	धारण युक्त रत्न
1	मेष	मंगल	मूंगा
2	वृष	शुक्र	हीरा
3	मिथुन	बुध	पन्ना
4	कर्क	चंद्रमा	मोती
5	सिंह	सूर्य	माणिक्य
6	कन्या	बुध	पन्ना
7	तुला	शुक्र	शुक्र
8	वृश्चिक	मंगल	मूंगा
9	धनु	गुरु	पुखराज
10	मकर	शनि	नीलम
11	कुम्भ	शनि	नीलम
12	मीन	गुरु	पुखराज

4.2 मंत्रो द्वारा रोगों का उपचार: जिस व्यक्ति की कुंडली में जो ग्रह रोग कारक होता हैं तो उस ग्रह मन्त्रों का जप करना चाहिए[15] |

ग्रह	मंत्र	जप संख्या
सूर्य	ऊँ सूर्याय नमः अथवा ऊँ घृणि सूर्याय नमः	7,000
चंद्रमा	ऊँ चं चंद्राय नमः अथवा ऊँ सों सोमाय नमः	11,000
मंगल	ऊँ भु भौमाय नमः अथवा ऊँ अं अंगारकाय नमः	10,000
बुध	ऊँ बुं बुधाय नमः	9,000
गुरु	ऊँ बृं बृहस्पतये नमः	19,000
शुक्र	ऊँ शुं शुक्राय नमः	16,000
शनि	ऊँ शं शनैश्चराय नमः	23,000
राहु	ऊँ रां राहवे नमः	18,000
केतु	ऊं कें केतवे नमः	17,000

4.3 हवन द्वारा रोगों का उपचार: जिस व्यक्ति की कुंडली में जो ग्रह रोग कारक होता हैं तो उनकी शांति के लिए सूर्यादि ग्रह के लिए क्रमशः आक, ढाक खैर, अपामार्ग, पीपल, गुलर, शमी, दूर्वा और कुश की समिधा का हवन करना चाहिए[16] |

4.4 दान द्वारा रोगों का उपचार: रोग मुख्य रूप से शरीरिक और मानसिक रूप से होते हैं[17] जो कि कर्म जन्य, दोष प्रकोप जन्य और कुछ रोग कर्म व दोषप्रकोप जन्य होती हैं | इन रोगों में कर्म जन्य तथा कर्मज दोषज रोग होते हैं वे ओषधि चिकित्सा करने पर शांत नहीं होते हैं क्योकि वे पूर्व जन्म कृत कर्म के कारण होते हैं | इनके उपचार के लिए दान, दया, ब्राह्मण, देवता और गुरुजन का पूजन, नमन, जप, तप आदि पुण्य कर्मों के संचय से क्षीण

होकर शांत हो जाते हैं[18] | अत: पूर्वार्जित अशुभ कर्मों के प्रभाववश उत्पन्न दीर्घ कालीन एवं असाध्य रोगों से छुटकारा पाने के लिए रोगी को रोग कारक वस्तुओं का दान करना चाहिए | नवग्रहों के सम्पूर्ण दान का विवरण इस प्रकार है[19] |

सूर्य: माणिक्य, गेहूं, कमल, गुड़, ताम्र, लाल कपड़े, लाल पुष्प, सुवर्ण, ताँबा, घी, मसूर की दाल, कनेर या कमल के फूल, गाय का दान अगर बछड़े सहित, सोना सूर्य सेसम्बन्धित रत्न का दान|
सूर्य से सम्बन्धित वस्तुओं का दान रविवार के दिन दोपहर में ४० से ५० वर्ष के व्यक्ति को देना चाहिए |

चंद्रमा: मोती, चाँदी, चावल, चीनी, जल, सफेद कपड़ा, दही, शंख, सफेद फूल, साँड, भात, दूध,
चन्दमा से सम्बन्धित वस्तुओं का दान सोमवार के दिन संध्या काल में किसी महिला को देना चाहिए |

मंगल: •ताँबा, गेहूँ, लाल कपडा, मीठी रोटी, •मसूर की दाल, •हनुमान जी को चोला अर्पित करना,, •हनुमान मंदिर में ध्वजादान करना, •बंदरो को चने खिलाना, मूंगा, घी, रक्त चंदन, गेहूँ, लाल केस, लाल फूल का दान, स्वर्ण, लाल फल तथा कुमकुम
मंगल से सम्बन्धित वस्तुओं का दान मंगलवार के दोपहर में किसी लाल वर्ण का क्षत्रीय या ब्रह्मण को देना चाहिए |

बुध: मूंग (साबुत), हरा कपड़ा, कांसा, सफेद चंदन, हरा फुल, हरा फल, नारियल, सुपारी, हरी सब्जी, मूंग का दाल एवं हरे रंग के वस्तुओं, •हरे रंग की चूड़ी और वस्त्र का दान किन्नरो, पन्ना, घी, चाँदी तथा कपूर का दान |
बुध से सम्बन्धित वस्तुओं का दान बुधवार के दिन दोपहर का समय में •किसी छोटी कन्यां को देना चाहिए |

गुरु: चना दाल, चीनी, हल्दी की गांठ, पीला कपड़ा, पीला फल, पीला फुल, नमक, स्वर्ण, शहद, नारियल, सुपारी, गुरूवार व्रत कथा की पुस्तक, पशु-अश्व, केला और पीले रंग की मिठाईयां, पीला केशर, मिठाईयां, हल्दी, पीला फूल, पुखराज, चने की दाल, हल्दी, पीला कपड़ा, गुड़, केसर, घी और सोने की वस्तुओं तथा गरीब बच्चो व विद्यार्थिओं में अध्यन सामग्री
गुरु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान गुरुवार के दिन सुबह समय में •किसी ब्राह्मण, गुरू अथवा पुरोहित को देना विशेष फलदायक होता है

शुक्र: चावल, सफेद कपड़ा, चंदन, सफेद फुल, सफेद फल, घी, कपूर, चांदी, नारियल, शुक्रवार व्रत कथा की पुस्तक. श्वेत अश्व या श्वेत सवत्स गाय. श्वेत और चमकीले वस्त्र व सुगंध, सुगंधित तेल रंगीन वस्त्र, रेशमी कपड़े, चीनी, खाद्य तेल, चंदन, कपूर का दान, श्वेत रत्न, दूध, सफेद कपड़ा, घी, धूप, अगरबत्ती, इत्र तथा सफेद चंदन का दान
शुक्र से सम्बन्धित वस्तुओं का दान शुक्रवार के दिन संध्याकाल में किसी युवती को देना विशेष फलदायक होता है

शनि: ग़रीब और वृद्ध को काला कपड़ा, साबुत उड़द, लोहा, तेल, काला पुष्प, काले तिल, चमड़ा का

समान, नमक, सरसों तेल, काले कंबल. काला छाता, नीलम रत्न, काली गाय, काले वस्त्र, काले जूते, खेती योग्य भूमि, बर्तन व अनाज, कोयला, जौ, तथा सरसों आदि

शनि से सम्बन्धित वस्तुओं का दान शनिवार के दिन संध्याकाल में किसी ग़रीब और वृद्ध को देना विशेष फलदायक होता |

राहु: उड़द (साबुत), काली या सफेद तिल्ली, नीला कपड़ा, लोहा, नीला फूल, नीला फल, सरसों (साबुत), नारियल, दक्षिणा, सुपारी, कृष्ण अश्व, काला एवं गोमेद, नीला कपड़ा, कंबल, साबूत सरसों (राई), ऊनी कपड़ा, काले तिल व तेल

राहु से सम्बन्धित वस्तुओं का दान शनिवार के दिन राहुकाल में किसी ग़रीब या अपाहिज को देना विशेष फलदायक होता |•

केतु: उड़द (साबुत), काली सा सफेद तिल्ली, तेल, काला कपड़ा, काला फुल, काला फल, काजल, सात प्रकार के धान्य (अनाज), नारियल, दक्षिणा, सुपारी, कृश्ण अश्व, वार-शनिवार वैदूर्य, अनाज, काजल, झंडा, ऊनी कपड़ा, तिल आदि |

4.5 स्नान द्वारा रोगों का उपचार: ग्रह चिकित्सा में रोग पीड़ा के लाभ के लिए स्नान भी एक प्रमुख उपाय माना गया हैं | फलित ज्योतिष ग्रंथों में लाजवंती, कूट, वरियर,कांगनी, मोथा, सरसों, हल्दी, देव दारू, शर फोंका तथा लौघ को तीर्थोदक में मिला कर स्नान करने से ग्रह पीड़ा तथा रोग पीड़ा नष्ट हो जाती हैं[20] | कुछ आचार्यों के अनुसार जिस व्यक्ति की कुंडली में जो ग्रह रोगकारक हो, उस व्यक्ति को उस ग्रह की औषधियाँ का जल से स्नान करना चाहिए[21] | सूर्य आदि ग्रहों की औषधियां:

कमांक	ग्रह	स्नान के लिए औषधियाँ
1	सूर्य	कनेर, देवदार, केसर, इलायची, महुआ के फूल, मेनाशिल, खश, मुलेठी
2	चन्द्र	पंच गंध, गजमद, शंख, श्वेत चन्दन एवं स्फटिक
3	मंगल	विल्ब छाल, रक्त चन्दन, रक्त पुष्प, माल कंगनी, मूल श्री
4	बुध	गोबर,मधु,अक्षत,स्वर्ण, मोती एवं गोरेचन
5	गुरु	मालती पुष्प,पीली सरसों, मुलहठी एवं मधु
6	शुक्र	इलायची, केसर,मैनसिल एवं सुवृक्षमूल
7	शनि	काले तिल,सुरमा, लोबान, सौफ, मुत्थरा एवं खिल्लां
8	राहु	लोबान, तिलपत्,हाथी दांत मोथा एवं कस्तुरी
9	केतु	लोबान, तिलपत्,हाथी दांत मोथा एवं कस्तुरी

निष्कर्ष: मानव जीवन एक जटिल पहेली हैं | प्रत्येक व्यक्ति अपने भविष्य के बारे में तथा अपने शरीर के विषय में रहस्योद्घाटन करना चाहता हैं | जो की ज्योतिष एक परम पवित्र एवं दिव्य विद्या हैं के द्वारा जाना जा सकता हैं | मानव शरीर अनेकानेक जन्मों के कर्म से ही जन्म लेने को बाध्य होते हैं, उसी प्रकार इन कर्मों द्वारा ही उन्हें अपने जीवन काल में अनेक शारीरिक व मानसिक व्याधियों को भोगने के लिए बाध्य होना पड़ता हैं | कर्म व्याख्या के अनुसार कर्म तीन प्रकार के हैं- संचित, प्रारब्ध एवं क्रियमाण | प्राणी के प्रथम

जीवन के प्रारम्भिक कर्म से वर्तमान क्षण तक किये गये सारे कर्म संचित कर्म कहलाते हैं, संचित कर्मों का वह भाग जिसका भोग प्रारम्भ हो चूका हैं प्रारब्ध कहलाता हैं, आगे जो कर्म किये जायेगे वह क्रियमाण हैं ज्योतिष इन्ही संचित, प्रारब्ध एवं क्रियमाण संज्ञक कर्मों का क्रमबद्धता को सूचित करता हैं | प्रारब्ध कर्मानुसार ही व्यक्ति कुछ निश्चित सांसारिक प्रवृत्तियां लेकर एक स्थान एवं समय विशेष में जन्म लेता हैं तदनुसार सुख-दुःख परिस्थियों को भोगता रहता हैं | कर्मों की गति यद्यपि विचित्र है मानवीय दृष्टि से यह पता लगाना कठिन हो जाता है कि किस पाप का परिपाक कहाँ जाकर होगा। उसका फल कब मिलेगा । इन कर्मों का फल कालान्तर में प्रकृति जन्य रूप में उसी प्रकार मिलता है, जिस तरह मक्का का फल दो महीने, जौ, गेहूँ सात महीने में और अरहर के बीज का फल दस महीने में मिलता हैं अत: सभी अच्छे-बुरे कर्मों का फल जीवात्मा को अनिवार्य रूप से भोगना पड़ता है[22]।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. "धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम् ।" (च.सं.सू. 1/15)
2. शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम -
3. 'जन्मांतर कृतं पापं व्याधि रूपेण जायते"
4. रोगस्तु दोष वैषम्यं दोष साम्यमरोगता - अष्टांग ह्रदय 1/20
5. सर्वेषामेव *रोगाणां* निदानं कुपिता मलाः ॥गरुण पुराण - 1/146/13 ॥
6. प्रश्न मार्ग अध्याय 13 श्लोक 39
7. *कर्मजा व्याधय*: केचिद दोषजा: सन्ति चापरे । चरकसंहिता उत्तर तंत्र अध्याय ४०
8. वृहतज्जातकम, अध्याय 2 श्लोक 1
9. मस्तक ममु खोरो ह्रदुदर कटिवात | लिंगोंरुजानु जन्ग धान्धि मेषादित: कालागंम || -जातक तत्त्वम अध्याय 1/ श्लोक 2
10. यदा खगा: स्यु: प्रतिकूल वर्तिन:, प्रश्ने जनौ गोचरकेऽगिनां | कुर्वन्ति पीड़ां निज दोषतो निजा अंगेतो हितोप्सू: किल तान समचर्च येत || गदावली, श्लोक 4
11. संचित येन्मंगल मान्दद्य भावतो, गदा न्नभो गैरुत रोग समगे: - गदावली 1/5
12. प्रश्न मार्ग अध्याय 13 श्लोक 29
13. माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणिगारुत्मकं पुष्पक वज्र नीलम | गोमेद वैदूर्य कमर्कत: स्यु रत्ना नयथो ज्ञ स्य मुदे सुवर्णम -मुहुर्त चिंतामणि अध्याय गोचर प्रकरणम श्लोक 10
14. ज्योतिशास्त्र में रोग विचार
15. बृहत्पाराशर होरा शास्त्र अध्याय 87 श्लोक 17-18
16. बृहत्पाराशर होरा शास्त्र अध्याय 87 श्लोक 19-20
17. कर्मप्रकोपेण कदाचितदेके दोष प्रकोपेण भवन्ति चान्ये | तथापरे प्राणषु कर्मदोषप्रकोपजा: कायम्नोविकरा: || - वीरसिंहावलोक ज्वराधिकार श्लोक 19
18. दानैर्दयाभिरपि च द्विजदेवतागो गुर्वर्चनप्रणतिभिश्च जपै स्तपोभि:| इत्युक्त पुण्यनिचयैरचीय माना: प्राक्पापजा यदि रुज: प्रशमं प्रयान्ति || - वीरसिंहावलोक ज्वराधिकार श्लोक 23
19. ज्योतिशास्त्र में रोग विचार डा शुकदेव चतुर्वेदी पृ 219
20. भाव प्रकाश अध्याय 8 श्लोक 16

21.ज्योतिशास्त्र में रोग विचार डा शुकदेव चतुर्वेदी पृ 220

22.अवश्यमेवभोक्तव्यं यद् यद् कर्म शुभाशुमम्